आवश्यक निवेदन

जीवस्थान षट्खण्डागमका प्रथम खण्ड है। उसका प्रथम अनुयोगद्वार सत्प्ररूपणा है। उसकी प्रथम पुस्तक का अमरावती कारंजा और आरा की हस्तलिखित प्रतियोके आधारसे सम्पादन होकर इ. स. १९३९ मे प्रकाशन हुआ था। उस समय मूडबिद्रीके सिद्धांतमंदिरमें स्थित ताडपत्रीय प्रतियाँ अनुपलब्ध थी। प्रसन्नता है कि पुनः इसके संशोधनके समय सोलापुर स्थित श्री जीवराज जैन ग्रंथमाला के यशस्वी मंत्री काका श्री. वालचंद देवचंदजी शहा इनके सत्प्रयत्नसे उनके फोटो प्रिंट उपलब्ध हो गये हैं। उन्होंने इन्हे एन्लार्ज भी करा लिया है। साथ ही श्री. पं. बालचंदजी शास्त्री और श्री. प्रो. जिनेंद्रकुमार भोमाज को नियुक्त कर मुद्रित प्रतियोंको सामने रखकर उनके पाठभेद भी लिखवा लिये है।

किन्तु जब जीवराज जैन ग्रंथमालाने षट्खण्डागम धवलाकी अनुपलब्ध प्रथम छह पुस्तकोंको पुनः प्रकाशन का निर्णय कर उक्त पाठभेदोंके आधारसे उनके संशोधनका कार्य मुझे सौंपा तब सत्प्ररूपणा प्रथम पुस्तक का संशोधन करते समय मुझे यह अनुभव हुआ कि केवल इन पाठभेदोंके आधारसे संशोधन करना इसलिए पर्याप्त न होगा, क्योंकि, मात्र उन पाठभेदोंके आधारसे विचार करते हुए मुद्रित प्रतीमें ऐसे प्रचुर स्थल सन्देहास्पद रह जाते है जिनके लिए फोटो प्रिंटसे मिलान करना उपयोगी होगा। जब मैंने अपना यह दृष्टिकोण काका श्री. वालचंद देवचंदजी शहाके सामने रखा तब उन्होंने डॉ. ए. एन्. उपाध्येजी से परामर्ष कर फोटो प्रिंटोंसे मिलान की सब व्यवस्था करते हुए स्व. श्री. पं. एन्. चंद्रराजेंद्र शास्त्री को इस कार्यमें मेरी सहायता करने के लिये नियुक्त कर दिया।

षट्खण्डागम धवला और कषाय प्राभृत जयधवला की ताडपत्रीय सब प्रतियाँ हळे कानडी लिपिमें लिपिबद्ध हुई है। स्व. श्री. पं. एन्. चंद्रराजेंद्र शास्त्री को इस लिपीके पढनेका अच्छा अभ्यास था। वे बडी सुगमता से उन्हें पढते थे। अतः उनकी सहायतासे मैंने सत्प्ररूपणा प्रथम पुस्तक का अच्छी तरह सर्वांग मिलान किया। इससे शंकास्पद स्थलोंको ठीक करनेमें बडी सहायता मिली। अब स्व. श्री. एन्. चंद्रराजेंद्र शास्त्री हमारे बीच नही है। असमयमें उनका वियोग एक अनहोनी घटना है। जब तक यह संशोधन का कार्य चलेगा उनकी याद बराबर आती रहेगी। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक प्रतीत होता है कि मूडबिद्रीमें षट्खण्डागम धवला की ताडपत्रीय तीन प्रतियाँ है। उनमेंसे एक प्रति अधूरी प्रतीत होती है। शेष दो प्रतियां पूर्ण हैं। इतना अवश्य है कि बीचबीचमें उनके भी अनेक पत्र नष्ट हो गये हैं, और कहीं कहीं एकादा वाक्य वा कुछ अक्षर त्रुटित हो गये है। फिर भी उक्त दोनो प्रतियोंके फोटो प्रिंटोंके आधारसे ग्रंथके सन्दर्भ के मिलानमें कठिनाई नही जाती। ऐसे कुछ ही स्थल शेष रहते है जो त्रुटित रह जाते हैं। मैंने अपना यह अनुभव सत्प्ररूपणा प्रथम पुस्तक और द्वितीय पुस्तक के मिलानके आधारसे लिखा है। संभव है कि आगे कुछ ऐसे स्थल भी हो जो सभी प्रतियोंमें न होनेसे उपलब्ध न किये जा सके।

इन तीन प्रतियोंमें से एकका संकेताक्षर 'अ' है। लगता है यह सबसे प्राचीन होनी चाहिये, क्योंकि, अन्य दो प्रतियोंमें उद्धृत रूपसे जो कतिपय अधिक गाथाएँ पाई जाती हैं वे उसमें नही हैं। शेष दो प्रतियाँ उसके बाद लिपिबद्ध की गई जान पडती हैं। उनमेंसे खंडित प्रति का संकेत अक्षर 'क' है और तीसरी पूर्ण प्रति का संकेत अक्षर 'ब' है।

प्रथम संस्करण से इस संस्करणमें पाठभेदोंकी दृष्टि से पर्याप्त संशोधन हुआ है। यद्यपि प्रथम संस्करण से इस संस्करणमें जहाँ जहाँ पाठोंका संशोधन किया गया उन संशोधित पाठोंको मूलमें स्वीकार कर प्रथम संस्करणके पाठोंको 'मु' इस संकेताक्षरके साथ पादटिप्पणोंमें दे दिया गया है। तथापि पाठकोंको संशोधन की विशेषता का ज्ञान करानेके अभिप्रायसे उनमें कई दृष्टियोंसे अनेक उपयोगी संशोधित पाठोंकी मालिका यहाँ दी जाती है–

पृ.	पं.	प्रथम संस्करण	पृ.	पं.	द्वितीय संस्करण
१	१	अप्पुत्थ	१	१	अप्पत्थ
१३	२	साहूपसाहा	१३	२	साहुपसाहा
१५	५	सुकुक्खि	१५	५	सुक्कुक्खि
१६	९	णियतवाचय	१६	८–९	णियतव्वाचय
३२	१	किमिति	३३	३	किमर्थमिति
३२	५	दहति	३३	७	घातयति दहति
३६	२	सर्वोद्धम्	३७	१	सर्वाद्धा
३८	२	मङ्गलम्। तन्न	३९	२	मङ्गलत्वम्। न
३९	१०	मंगल-फलं-देहिंतो कय अब्भुदयणिस्सेयससुहाइस्सं	४०	१०	मंगलफलं अब्भुदयणिस्सेयस सुहाइ। तं
४०	३	वि णमो सुत्तं	४१	२	इणमो सुत्तं
४१	५	तच्च	४२	५	तं च
४१	६	बिबद्ध देवदा	४२	६	कय-देवदा
४१	७	कय-देवदा	४२	७	ण णिबद्धो
५२	८	रत्नाभोगस्य	५३	८	रत्नभागस्य
६७	१	धारया	६८	१	धरा य
६७	५	धरसेण	६७	५	धरसेणाइरिय
८१	९–१०	जाणुग	८२	८	जाणय
८१	१०	सरीरं च भवियं	८१	८	सरीरं भवियं
८३	११	प्रोष्यस्य	८४	१०–११	प्रवति प्रोष्यस्य
९१	१	एवम्भूते	९२	१	एवम्भेदे
९२	४	जणिदोहवग्गहे	९३	५	जणिदोग्गहे
९६	९	णिसिहियं	९७	९	णिसीहियं

पृ.	पं.	प्रथम संस्करण	पृ.	पं.	द्वितीय संस्करण
१०२	१	धम्मदेसणं	१०३	१	धम्मुवदेसणं
११०	३	वेश्याणं वस्सा	१११	४	वेश्यावंसा
११०	१	अवलेव ओ	१११	९	अलेवओ
११२	१	मत्थिणिद्देस्सो	११३	१	मत्थणिद्देसो
१२२	१	वत्थूहं	१२३	१	वत्थूणं
१२३	१०	बज्झए	१२४	१०	बुज्झए
१२८	८	मछंद्दत्ता	१२९	८	मछडंता
१३०	१०	उत्तपयडि	१३१	१०	उत्ता पयडि
१३४	२	परिहृतमिति	१३५	३	परिहृत्य किमिति
१३५	३	सिद्ध	१३६	३	सिद्धि
१३६	५	नीतिनियमिते	१३७	५	'नि' नियमिते
१५७	३	पडिवज्जतिदि	१५८	३	पढिज्जदीदि
१६३	१	जहमसहणं	१६४	१	जमसद्दहणं
१७१	१	सिथिल	१७२	१०	सिढिल
१७५	२	नान्यतरेण	१७६	४	तान्यन्तरेण
१९४	६	सहार्षाव	१९५	६	सहास्यार्षाव
१९६	७	विच्छेदस्यार्थं	१९७	८	विच्छेदः स्यात्, अर्थं
१९७	५	भावेनैकत्वे	१९८	६	भागेनैकत्वे
२०१	३	सिद्धगदी	२०२	५	सिद्धिगदी
२०४	२	"	२०५	२	"
२१३	३	असंखेज्जाए गुणसेढीए	२१४	३	मसंखेज्जगुणाए सेढीए
२१८	३	कम्माणुसारी	२१९	१	कमाणुसारी
२२०	७	घादत्तबंधोसरण	२२१	७	घादतब्बंधोसरण
२२१	३	अ छद्दमाणेसु	२२१	८	अछंडमाणी सु
२२१	४–५	तदो तव्वयणाणं	२२१	११	तदो ण तव्वयणाणं
२२१	५	आइल्लु	२२१	१२	आइल्ल
२२१	६	इदि । आइरिय	२२२	१	इदि । आइल्लाइरिय
२२२	४	णिवट्टत्ति	२२३	१	फिट्टदि त्ति
२३२	१	वृत्तेः	२३४	७	वृत्तिः
२४५	७	वष्टम्भाच्चक्षुः । अनेकार्थं	२४७	५	वष्टम्भाच्चष्टेरनेकार्थं
२५१	१	तत्प्रतिघातः	२५३	५	तदप्रतिघातः
२५९	६	संज्ञिनः इति	२६१	११	संज्ञिनः, अमनस्का असंज्ञिन इति ।

पृ.	पं.	प्रथम संस्करण	पृ.	पं.	द्वितीय संस्करण
२६९	२	स्यासंभवः	२७१	१	स्वस्य संभवः
२७९	४	योगनिरोधात्	२८१	५	योगविरोधात्
२९३	१	पूर्वायु	२९५	५	छिन्नपूर्वायुषा
२९४	४	न पुनरस्यार्थः	२९५	५	न पुनरस्यर्षः
२९७	९	ऋद्धेरुपर्यभावात्	२९९	९	ऋद्धेरुपर्यृध्व्यभावात्
३१२	७	षट् पर्याप्तयो	३१४	७	षडपर्याप्तयो
३१८	८	संजदासंजद ट्ठाणे	३२१	१	संजदासंजद-संजद-ट्ठाणे
३२१	४–५	जादि जादि जादि	३१३	४–५	जंति जंति जंति
,,	६	पुनर्मरणं	,,	७	पुनरमरणं
३३२	८	संजदासंजद-ट्ठाणे	३३४	८	संजदासंजद-संजद-ट्ठाणे
३३७	४	विकलेन्द्रिय	३३९	४	विकलैकेन्द्रिय
३३८	३	शान्ततत्संतानानां	३४०	३	शान्तान्तस्संतानानां
३४०		वेदश्च स्त्रीवेदः।	३४२	१०	स एषामस्तीति स्त्रीवेदाः।
३४१		-वदनुगत	३४३	३	वदनवगत
,,		जीवस्य कर्तृत्वात्	,,	६	जीवस्य तस्य तत्कर्तृत्वात्
,,		पुमान्नपुंसकमुभया०	,,	१०	पुमान्नपुंसकः, उभया०
३४२		इट्ठावाग	३४४	२	इट्ठावाग-
,,		तणिट्ठवागग्गि	,,	५	तणिट्ठवागग्गि-
३४४		विषयाभिलाषे	३४६	३	विषयाभिलाषा
३४५		स्तेन विकाराभावात्	३४७	२	तेनाधिकाराभावात्
,,		कथमवसीयत	,,	५	कुतोऽवसीयत
,,		वेदादपि	,,	७	वेदावपि
,,		सन्तापान्यूनतया	,,	,,	सन्तापात् न्यूनतया
३४६		कषाय	३४८	७	पर्यायत्वात् कषाय०
३४७		तथोक्तं	३४९	१	तथोक्तेः।
,,		अत्रतन च शब्दः	,,	१०	अत्रतनः चशब्दो
३४८		भिन्नं तन्निर्देशो	३५०	१०	भिन्नस्तन्निर्देशो
३६०		भेयं च	३६२	१	भेयगयं
३६८		पुनः सयोग	३७०	१	पुनः स सयोग
३७०		नयादेशना	३७२	४–५	नयदेशना
,,		देशेनानु०	,,	६	देशनानु०
३७४		स्थानानां संख्या	३७६	१	स्थानसंख्या
,,		पेक्षया न, तत्र	,,	६	पेक्षया च तत्र

पृ.	पं.	प्रथम संस्करण	पृ.	पं.	द्वितीय संस्करण
३७५		ष्टात्संयमो	३७७	७	ष्टात्स संयमो
३७७		नावेवाभविष्यतां	३७९	३	नावभविष्यतां
३७९		विघे:	३८१	४	विधि:
,,		तद्धि ग्रहणं	३८१	५	तद्विधिग्रहणं
३८१		विशिष्टार्थ:	३८३	१	विशिष्टोऽर्थ:
,,		साधार्याभावे आधारकस्या	,,	४	आवार्याभावे आवारकस्या
३८३		दृष्टान्त	३८५	८	दृष्टार्थ
,,		सञ्जननात्	,,	९	सञ्जनात्
३९०		पूजणिरदो	३९२	२	पूजण-रदो
३९१		पाठो नास्ति	३९३	६	शुक्ललेश्याध्वानप्रतिपाद नार्थमाह—
३९२		रनन्तस्यापेक्षया तद्द्विश्यादि	३९४	१०	रनन्तस्यापि क्षय:, द्विश्यादि

ये कतिपय महत्त्वके पाठभेद हैं। जिनका यहाँ निर्देश किया है। इनमेंसे कतिपय पाठभेदोंको ध्यानमें रखकर अर्थमें भी परिवर्तन किया गया है। इससे समग्र ग्रंथ लगभग शुद्ध हो गया है। पंचनमस्कारस्वरूप प्रथम मंगलसूत्र प्रात:स्मरणीय भगवान् आचार्य पुष्पदंत की अमर कृति है। वह सर्वार्थसाधक है। अ. और ब. प्रतिमें वह ‘ णमो अरहंताणं ’ इत्यादि रूपसे लिपिबद्ध हुआ है। तदनुसार संशोधन करते समय मैंने यही पाठ स्वीकार कर लिया था। किन्तु मुद्रणके समय इसे बदल दिया गया है।

इस संस्करणके मुद्रण का पूरा भार श्री. पं. नरेन्द्रकुमार भिसीकर (न्यायतीर्थ) इनके ऊपर है। प्रूफ रीडिंग आदिका सब कार्य वे और प्रा. जिनेंद्रकुमार भोमाज देखते हैं। वे सरल स्वभावी, व्युत्पन्न और तत्त्वनिष्ठ विद्वान् हैं। उन्होंने इस कार्य को अच्छी तरह सम्पन्न किया। इसके लिये मैं उनका विशेष आभारी हूँ।

श्रीयुत पं. हीरालालजी सिद्धान्तशास्त्री का षट्खण्डागम धवलाके संपादनमें प्रारंभमें पूरा सहयोग रहा है। उन्होंने कषायप्राभृतचूर्णि और पंचसंग्रह आदि अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथोंका संपादन किया है। वे अनुभवी विद्वान् हैं। अतएव काका श्री. वालचंदजी देवचंदजी शहा की सम्मतिपूर्वक संशोधित संस्करणका बारीकीसे मिलान करनेके लिये मैंने उन्हे वाराणसी आमंत्रित किया था। मेरे इस आमंत्रणको स्वीकार कर वे वाराणसी आये। ७–८ दिन तक मेरे घर ठहरे रहे। ग्रंथमें कहीं कोई त्रुटि न रह जाय इस दृष्टिसे मैंने उनके साथ समग्र ग्रंथका मय टिप्पण आदिके साथ वाचन कर उसे अंतिमरूप दिया। इसके लिये मैं उनका आभारी हूँ।

श्रीमान् डॉ. हीरालालजी और श्रीमान् डॉ. ए. एन्. उपाध्ये श्री जीवराज जैन ग्रंथमालाके प्रधान सम्पादक हैं। उन दोनों विद्वानोंकी स्वीकृति पूर्वकही मुझे यह कार्य सौंपा गया था। इस विषयमें विशेष परामर्श करनेके लिए मैं एक बार श्री. माणिकचंदजी भिसीकर, न्यायतीर्थ, एम्. ए. (बाहुबली) इनके साथ तथा दूसरी बार श्रीयुत पं. ब्र. माणिकचंदजी चवरे इनके साथ कोल्हापूर गया। दोनों बार श्री. डॉ. ए. एन्. उपाध्येजीने अपने बंगलेमें मुझे बहुत अच्छी तरह रखा और आवश्यक परामर्श दिया। एतदर्थ मैं उक्त सब विद्वानोंका आभारी हूँ।

फोटो प्रिंटोंके आधारसे प्रस्तुत संस्करणका मिलान मैंने बाहुबली (कुंभोज) के वास्तव्यमें किया है। इसके लिये मुझे वहाँ सब प्रकारकी सुविधा प्रदान की गई। इसके लिये मैं पूरे बाहुबली विद्यापीठ परिवारका आभारी हूँ।

काका श्री. वालचंदजी देवचंदजी शहा तो जीवराज जैन ग्रंथमाला सोलापूरके प्राण हैं। अपनी वृद्धावस्था की चिंता न करते हुए वे निरलस भावसे जीवराज जैन ग्रंथमाला सहित अनेक साहित्यिक तथा शैक्षणिक संस्थाओंकी सम्हाल करते रहते हैं। श्रीसिद्धक्षेत्र कुंथलगिरीकी सम्हाल भी उन्हें ही करनी पडती है। उनकी ये सेवाएं स्वर्णाक्षरोंमें अंकित करने लायक हैं। वे दीर्घजीवी होकर इसी प्रकार धर्म और समाजकी सेवा करते रहे यह भावना है। उनका इस कार्यमें मुझे यथासंभव पूरा सहाय्य प्राप्त हुआ। इसके लिए मैं उनका भी आभारी हूँ।

इस संस्करणके मुद्रण का कार्य मेसर्स सन्मति मुद्रणालय, सोलापुरके संचालक तथा कर्मचारी गण इन्होंने अल्पावधिमें सुंदर छपाई के साथ संपन्न किया है। इसके लिये मै उनका भी आभारी हूँ।

इस संस्करणके संशोधनमें मैंने अपनी पूरी प्रतिभाका उपयोग किया है। फिर भी कहीं कोई त्रुटि रह गई तो विद्वान् पाठक उसे सुधार कर पढें यह नम्र निवेदन है।

विशेषु अलम्।

श्री सन्मति जैन निकेतन–
नरिया, वाराणसी–५
ता. ११–१०–७२

निवेदक
फुलचंद सि. शास्त्री